आरती बजरंग बलि की

आरती कीजै हनुमान लला की | दुष्टदलन रघुनाथ कला की ||

जाके बल से गिरिवर काँपे | रोग-दोष जेक निकट न झाँपे ||

अंजनी पुत्र महा बलदाई | संतन के प्रभु सदा सहाई ||

दे बीरा रघुनाथ पठाये | लंका जारि सिय सुधि लाये ||

लंका सो कोट समुद्र सी खाई | जात पवनसुत बार न लाई ||

लंका जारि असुर संहारे | सियारामजी के काज सवाँरे ||

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे | आनि सजीवन प्रान उबरे ||

पैठि पाताल तोरि जम -कारे | अहिरावन की भुजा उखारे ||

बायें भुजा असुर दल मारे | दहिने भुजा संतजन तारे ||

सुर नर मुनि आरती उतारे | जै जै जै हनुमान उचारे ||

कंचन थार कपूर लौ छाई | आरती करत अंजना माई ||

जो हनुमान जी की आरती गावै | बसि बैकुंठ परमपद पावै ||

लंक विध्वंस किये रघुराई | तुलसीदास प्रभु कीरति गाई ||

PDF by pmyojanahindime.in